LUKMAAN IAS

...Lead with Edge...

THE 5TH TIMES HIGHEST MARKS IN PUBLIC ADMN. FROM LUKMAAN IAS IN 7 YEARS OF JOURNEY.

ABHILASH MISHRA
AIR- 05

MARKS IN PA: 334
CSE - 2016

TWO TIMES HIGHEST FROM CONTENT ENRICHMENT BATCH.
ABHILASH MISHRA IN CSE 2016 & ASHWINI PANDEY IN CSE 2015

CSE - 2015
MARKS: 267

CSE - 2014
MARKS: 287

CSE - 2013
MARKS: 231

CSE - 2011
MARKS: 394

TANVI HOODA
RANK - 33
CSE- 2013

HIGHEST RANK IN PUBLIC ADMINISTRATION IN CSE 2013 FROM OUR REGULAR CLASSROOM PROGRAMME

OLD RAJINDER NAGAR CENTRE :-60/19, BEHIND ANDHRA BANK, DELHI-60
CONTACTS: 011-45696019, 8506099919 & 9654034293
MUKHERJEE NAGAR CENTRE:- 871, FIRST FLOOR, MAIN ROAD,
(OPPOSITE BATRA CINEMA), MUKHERJEE NAGAR - 110009
CONTACTS: 011-41415591 & 7836816247
email:enquiries@lukmaanias.com www.lukmaanias.com

2018 मुख्य परीक्षा के लिए टेस्ट श्रृंखला

पुनर्गठित और परिष्कृत टेस्ट कार्यक्रम

ONLINE लोक प्रशासन **OFFLINE**

क्रम सं.	अध्याय	स्तर	दिनांक
I	अध्याय 1 - परिचय	फाउंडेशन	11 नवम्बर 2017
II	अध्याय 1 - परिचय **टेस्ट 1 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	समकालीन गतिविधियाँ और समसामयिक	18 नवम्बर 2017
III	अध्याय 2 - प्रशासनिक विचार **टेस्ट 2 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन	02 दिसम्बर 2017
IV	अध्याय 2 - प्रशासनिक विचार **टेस्ट 3 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	संयुक्त लोकसेवा आयोग के आधार पर समकालीन गतिविधियाँ और समसामयिकी	09 दिसम्बर 2017
V	अध्याय 3 - प्रशासनिक व्यवहार अध्याय 4 - संगठन अध्याय 7 - तुलनात्मक प्रशासन अध्याय 8 - विकास की गतिकी **टेस्ट 4 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन	23 दिसम्बर 2017
VI	अध्याय 5 - उत्तरदायित्व और नियंत्रण अध्याय 6 - प्रशासनिक विधि अध्याय 10 - लोक नीति **टेस्ट 5 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन	06 जनवरी 2018
VII	अध्याय 3 - प्रशासनिक व्यवहार अध्याय 4 - संगठन अध्याय 7 - तुलनात्मक प्रशासन अध्याय 8 - विकास की गतिकी अध्याय 5 - उत्तरदायित्व और नियंत्रण अध्याय 6 - प्रशासनिक विधि अध्याय 10 - लोक नीति **टेस्ट 6 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	संयुक्त लोकसेवा आयोग के आधार पर समकालीन गतिविधियाँ और समसामयिकी	13 जनवरी 2018
VIII	अध्याय 9 - कार्मिक प्रशासन अध्याय 11 - प्रशासनिक सुधार की तकनीकें अध्याय 8 - नागरिक सेवा (प्रश्न पत्र 2) अध्याय 10 - स्वतंत्रता के बाद से प्रशासनिक सुधार (प्रश्न पत्र 2) **टेस्ट 7 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन + संयुक्त लोक सेवा आयोग के आधार पर समकालीन गतिविधियां और समसामयिकी	27 जनवरी 2018

IX	अध्याय 1 - भारतीय प्रशासन का विकास (प्रश्न पत्र 2) अध्याय 2 - सरकार का दार्शनिक व संवैधानिक ढांचा (प्रश्नपत्र 2) अध्याय 4 - केंद्र सरकार और प्रशासन अध्याय 6 - राज्य सरकार और प्रशासन **टेस्ट 8 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन	10 फरवरी 2018
X	अध्याय 3 - सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम अध्याय 5 - योजना और प्राथमिकताएं अध्याय 9 - वित्तीय प्रबंधन अध्याय 12 वित्तीय प्रशासन (प्रश्न पत्र 1) **टेस्ट 9 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन	17 फरवरी 2018
XI	अध्याय 7 - स्वतंत्रता के बाद से जिला प्रशासन अध्याय 11 - ग्रामीण विकास अध्याय 12 - शहरी स्थानीय सरकार अध्याय 13 - विधि व व्यवस्था प्रशासन अध्याय 14 - भारतीय प्रशासन में महत्वपूर्ण मुद्दे **टेस्ट 10 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	फाउंडेशन	24 फरवरी 2018
XII	अध्याय 1- भारतीय प्रशासन का विकास (प्रश्नपत्र 2) अध्याय 2 - सरकार का दार्शनिक व संवैधानिक ढांचा (प्रश्नपत्र 2) अध्याय 4 - केंद्र सरकार और प्रशासन अध्याय 6 - राज्य सरकार और प्रशासन अध्याय 3 - सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम अध्याय 5 - योजना और प्राथमिकताएं अध्याय 9 - वित्तीय प्रबंधन अध्याय 12 - वित्तीय प्रशासन (प्रश्नपत्र 1) अध्याय 7 - स्वतंत्रता के बाद से जिला प्रशासन अध्याय 11 - ग्रामीण विकास अध्याय 12 - शहरी स्थानीय सरकार अध्याय 13 - विधि व व्यवस्था प्रशासन अध्याय 14 - भारतीय प्रशासन में महत्वपूर्ण मुद्दे **टेस्ट 11 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)**	संयुक्त लोकसेवा के आयोग के आधार पर समकालीन गतिविधियाँ और समसामयिकी	10 मार्च 2018
	टेस्ट 12 पर परिचर्चा (राजिंदर नगर)		17 मार्च 2018

टेस्ट समय : 10:00 पूर्वान्ह - 01:00 अपरान्ह **परिचर्चा समय: 2:00 अपरान्ह - 5:00 अपरान्ह**

प्रश्न पत्र 1 और 2 के लिए निःशुल्क मॉक टेस्ट (2017 के लोक प्रशासन के टेस्ट श्रृंखला के प्रश्न-पत्र)

लेखकीय क्षमता निखारें !

प्रस्तावना

सामान्यतया, परीक्षार्थियों का मुख्य ध्येय उत्तर लिखना है , जिससे समय पर प्रश्न पत्र पूरा हो जाए. इस तीव्र दबाव में, यह मुश्किल ही हो जाता है कि प्रश्नों में ठीक-ठीक क्या पूछा जा रहा है, विशेषकर प्रश्नों में प्रयुक्त मुख्य शब्दावली और उप सर्ग या प्रश्नों में उल्लिखित प्रत्यय , उदाहरणार्थ; विश्लेषण/वर्णन/व्याख्या आदि. अतः प्रश्न की क्या मांग है और वास्तव में क्या लिखा गया है के बीच सुमेल नहीं हो पाता.

अधिकांश छात्र अपने विषय , अवधारणाओं, सिद्धांतों और प्रसंगों के बारे जानते हैं परन्तु वे उन्हें प्रस्तुत करना नहीं जानते हैं. याद रखें,

परीक्षा एक कला है और अनिवार्य रूप से ज्ञान की कसौटी नहीं है.

आपने अक्सर देखा होगा कि कोई छात्र जो कम घंटे ही अध्ययन करता है परन्तु परीक्षा में बेहतर प्रदर्शन करता है. जबकि कुछ लोग जो रात-रात भर पढ़ते हैं और अपने नजदीकी लोगों से भी कट जाते हैं , परीक्षाओं में बेहतर प्रदर्शन नहीं कर पाते. ऐसा क्यों ? वे अक्सर अपने दुर्भाग्य को दोष देते हैं, कुछ बुरे सगुन, कुछ नफरत करने वालों का शाप को इसकी वजह बताते हैं. इस दोष देने वाली प्रवृत्ति से बाहर निकलें. अपने श्रम व निष्ठा को शाप न बनाएं. संभवतः इसका कारण आपकी लेखन कौशल की कमी हो.

इसपर कुछ विचार करें, सामान्य अध्ययन और वैकल्पिक विषय के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप एक पैटर्न का अनुसरण करते हैं , जिसमें सामान्यतया पहले विषय या समस्या की भूमिका, तब विभिन्न पैरा में सभी पहलुओं को लिखते हैं और तब आप एक अच्छा निष्कर्ष लिखते हैं. आपने कुछ भी गलत नहीं लिखा मगर आप अच्छे अंक नहीं पाते हैं. प्रश्न है , क्यों? हमें लगता है आपने तीन चीज़ें की या उनमें से कम से कम एक :

तीन सिद्धांत जिसकी आप प्रश्नों को समझने में उपेक्षा करते हैं

1. आपने प्रश्न को बहुत गंभीरता से नहीं पढ़ा.
2. आपने निर्देशों या आदेशों या मांगों या जो कुछ जिसे आप कह सकते हैं , जैसे; चर्चा, आलोचनात्मक परीक्षण, व्याख्या, उदाहरण सहित समझाना आदि की परवाह नहीं की.
3. आपने प्रश्नों के संदर्भ , प्रश्नों के भाग और प्रश्नों के परस्पर संबंधों पर ध्यान नहीं दिया.

कृपया, कृपया और कृपया प्रश्नों को जितना संभव हो गंभीरता के साथ पढ़ें :

सवालों का चयन आराम से करें.

- सबसे पहले उस प्रश्न का उत्तर लिखें जो आपको सबसे बेहतर तैयार हो.
- उत्तर की लम्बाई के बजाय उसके सार तत्व पर ध्यान दें.
- मात्रा व गुणवत्ता के बीच संतुलन होना चाहिए.
- प्रश्न के संदर्भ, विषय वस्तु और आदेश के अनुरूप लिखें.

बेहतर उत्तर के लिए तीन सिद्धांत का दर्शन

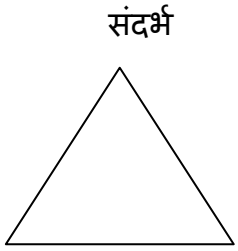

तत्व की तुलना में उत्तर की लम्बाई की प्रासंगिकता कम है

आप कह सकते हैं कि, महोदय, जहां इतना समय है, मैं उत्तर चूक जाउंगा. हम बताना चाहेंगे कि आप अधिकतम शब्दों, जितने की अनुमति दी गई है , न लिखें. यह अधिकतम शब्दों की सीमा है मगर कम से कम की नहीं परन्तु तब शब्दों की संख्या समुचित होनी चाहिए. अपने उत्तरों को लिखने में आप पहला पैरा निबंध के प्रारूप में और शेष को बिन्दुवार परन्तु अंतिम निष्कर्ष का पैरा निबंध के रूप में लिखना चाहिए. यदि औचित्य हो तो इस योजना में बदलाव हो सकता है.

अतः मुख्य बिंदु पर आते हैं; प्रश्न को सावधानीपूर्वक पढ़िए और तीन चीजों पर निर्णय करें:

1. प्रश्न का सटीक अर्थ क्या है?
2. प्रश्न कितने भागों में है?
3. प्रश्न के निर्देश, मांग या आदेश क्या हैं?

स्पष्टीकरण

1. अर्थ को कोई कितना बेहतर समझ रखता है यह ज्ञान के स्तर और जो प्रश्न गढ़ा गया है उसकी विषय-वस्तु / प्रसंग की समझ पर पर निर्भर करता है.
2. प्रश्न के संदर्भ का अर्थ विस्तृत रूप से प्रश्न का क्यों/कब/क्या है.
3. एक प्रश्न के विभिन्न भाग हो सकते हैं, जिसके सभी भागों के उत्तर देने की आवश्यकता हो सकती है.
4. उपसर्गों और प्रत्ययों की बेहतर समझ होनी चाहिए जो प्रश्न के आदेश और निर्देश को निर्धारित करते हैं.

प्रश्नों में प्रयुक्त शब्दावलियों की समझ

यह प्रश्न का उपसर्ग या प्रत्यय है जो उत्तर के निर्देश और आदेश को निर्धारित करता है . यह आपके सुविधा के लिए है, हम स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं कि इन शब्दों का क्या अर्थ है और आपको क्या लिखना होगा.

शब्दावली	अर्थ और मांग
चर्चा	चर्चा में आपको किसी मुद्दे पर उसके दो या सभी पहलुओं पर लिखना होगा. आलोचना न करें, बस सीधे विश्लेषणात्मक तरीके से सभी पक्षों को प्रस्तुत करें. निष्कर्ष के रूप में सभी पक्षों का संक्षिप्त सारांश लिखें.

समालोचनात्मक चर्चा	पुनः पहलुओं पर समालोचनात्मक चर्चा करें. चर्चा में आप किसी मुद्दे या समस्या पर उसके दो या सभी पहलुओं पर लिखें. चर्चा एक विस्तार है जिसमें किसी समस्या, मुद्दे और एक परिघटना के सभी पहलुओं को प्रस्तुत करना है. समालोचना एक लोकप्रिय आदेश है. समालोचनात्मक चर्चा किसी के उसके फायदे और नुकसान के परीक्षण द्वारा सभी पहलुओं के प्रस्तुत करने को दर्शाता है. कोई सभी पहलुओं को प्रस्तुत नहीं करता बल्कि विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करता है. समालोचनात्मक चर्चा पहलुओं के परीक्षण द्वारा या तो दो पहलुओं या पहलुओं के परीक्षण को संदर्भित करता है. एक किसी परिघटना का सकारात्मक बिंदु और नकारात्मक बिंदु देना है. उदाहरणार्थ अहिंसा के गांधीवादी विचार पर समालोचनात्मक चर्चा करनी है. इसमें अहिंसा के सकारात्मक बिन्दुओं को देखें औरभारतीय राष्ट्रीय संघर्ष का उदाहरण जरूर दें. तब अहिंसा कि अवधारणा की गंभीरता के साथ आलोचना करें और अहिंसा के सभी नकारात्मक पहलुओं को उद्धृत करें.
व्याख्या	यह एक सामान्य निर्देश भी है. आप समस्या का अर्थ लिखते हैं जिसमें सभी पहलु सम्मिलित हैं. आप सामन्यतया समस्या में उभर सकने वाली सभी चीजों को लिखने का प्रयास करते हैं. हम एक उदाहरण दे सकते हैं; क्यों स्मार्ट सिटी कार्यक्रम, यह 'स्मार्ट सिटी की व्याख्या' में लिखना होगा. व्याख्या सभी 'क्यों' का उत्तर है. यह सभी पहलुओं को छूता और उसकी पड़ताल करता है. स्पष्टीकरण या व्याख्या प्रश्न के संदर्भ को लिखने के लिए आवश्यक है. आप दिए गए संदर्भ द्वारा व्याख्या करते हैं या सहमत होते हैं. स्पष्ट शब्दावली में आप बिना किसी आलोचना और अपनी राय दिए सभी पहलुओं को लिखते हैं.
समालोचनात्मक परीक्षण, परीक्षण और मूल्यांकन	ये सभी सामान अर्थ ही दर्शाते हैं. आप पहले परिचय की दो पंक्तियों के बाद विचार या प्रस्तुति क्या है, का संक्षिप्त वक्तव्य लिखते हैं. केवल तभी आप मूल्यांकन, आलोचना या परीक्षण कर सकते हैं. परीक्षण का अर्थ केवल विचार की अस्वीकृति नहीं होती बल्कि इसका अर्थ समर्थन व प्रशंसा भी होता है. ऐसे प्रश्नों में आप अपनी तरफ से आलोचना नहीं करते हैं. आप एक विद्वान् की तरह आलोचना करने के योग्य नहीं हैं. आलोचना विद्वानों के विचारों के आधार [पर करें. संक्षेप में, आपको प्रस्ताव को ध्वस्त करना चाहिए.
टिप्पणी	सामान्यतया यह प्रश्न के अंत में प्रस्तुत किया जाता है और इसीलिए इसे प्रत्यय कहा जाता है टिप्पणी में, आप किसी समस्या या मुद्दा या विषय पर विश्लेषणात्मक तरीके से विभिन्न पहलुओं को लिखते और आप अपनी राय भी देते हैं. टिप्पणी में सम्पूर्ण समस्या या मुद्दे को प्रस्तुत किया जाता है और मुद्दे या समस्या से संबंधित विभिन्न पहलुओं और विभिन्न विचारों की प्रस्तुति है. आलोचना करने का प्रयास नहीं करना चाहिए. आलोचना विद्वानों के विचार हैं और टिप्पणी आपके विचार हैं.
आलोचनात्मक टिप्पणी	साधारण शब्दों में आलोचनात्मक टिप्पणी दोहरा मूल्यांकन है. टिप्पणी में किसी को किसी विशेष मुद्दे पर अपना विचार देना होता है. टिप्पणी में किसी को ऐसी टिप्पणी करने की स्वतंत्रता है जो उस टिप्पणी के लिए या उस विचार के विरोध को दर्शाता हो. टिप्पणी निराधार नहीं है. इसके लिए आपको एक सामान्य अवलोकन की आवश्यकता है और तब आप टिप्पणी करें. यह सामान्य अवलोकन एक प्रकार का मूल्यांकन भी है. आलोचनात्मक टिप्पणी के लिए आपको एक मूल्यांकन के साथ सभी पहलुओं को दिखाना है जो व्यवस्थित और ठोस आधार पर हो. एक तो सभी मुद्दों के विवाद को एक-एक कर सावधानीपूर्वक देखना चाहिए. मूल्यांकन एक निश्चित मापदंड है. इस

	मूल्यांकन को दिए गए विषय या समस्या के गुणों और अवगुणों को दर्शाना चाहिए. इसलिए आलोचनात्मक टिप्पणी, एक व्यवस्थित रूप में मूल्यांकन के बाद टिप्पणी को दर्शाता है. टिप्पणी सुचिंतित रूप में किसीका विचार है परन्तु जब यह आलोचनात्मक टिप्पणी हो तब यह विचार व्यवस्थित मूल्यांकन के बाद देना चाहिए. उदाहरणार्थ; यदि कोई राष्ट्रवाद के प्रश्न पर टिप्पणी करता है, वह सामान्यतया कह सकता है कि राष्ट्रवाद पवित्र है और किसी को भी इसके खिलाफ कहने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए. अन्य गैर आलोचनात्मक टिप्पणी हो सकता है कि राष्ट्रवाद के कई आधार हैं और इसके विभिन्न विचार हो सकते हैं. आलोचनात्मक टिप्पणी राष्ट्रवाद के सिद्धांत के मूल्यांकन के द्वारा किया जाएगा और तब एक स्थिति लेगा. कोई राष्ट्रवाद के महत्व और राष्ट्रवाद के सकारात्मक प्रभाव दोनों का मूल्यांकन कर सकता है.
विश्लेषण	यह बारम्बार आने वाला निर्देश है. आप साधरण रूप से एक सादृश याद रखें. चिकित्सा छात्र की तरह जैसे वो अपने प्रयोगशाला में कीट या मानव अंगों को काटकर देखता है वैसे आप समस्या का विश्लेषण करते हैं. आप गहराई में जाते हैं, आंतरिक अर्थों को देखना चाहते हैं.
समालोचनात्मक विश्लेषण	हमने पहले ही विश्लेषण के अर्थ की प्रस्तुति की है. कोई भी किसी घटना के गहराई में जाने कि कोशिश में उसे विश्छेदित करता है और किसी घटना के कारण को प्रस्तुत करता है. इसके लिए किसी को घटना के अंदरूनी तहों में जाने की आवश्यकता है और उसकी शिराओं की खोज करणी पड़ती है. समालोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ एक गहन शिरा निरीक्षक है. कोई घटना के केवल मूलभूत कारणों को ही नहीं दर्शाता है बल्कि सभी अन्य आयामों को भी दर्शाता है. समालोचनात्मक विश्लेषण के लिए किसी को मूलभूत कारणों के साथ ही उसके गुणों अवगुणों को भी दर्शाने की आवश्यकता है. यह कारणों के सभी अंतरसंबंधित पहलुओं को देखने और विचार करने को संदर्भित करता है. यह गहराई में और मूलभूत और अंतरसंबंधित कारणों का विश्लेषण करता है. उदाहरणार्थ, कोई भारत में काले धन की समस्या का समालोचनात्मक विश्लेषण करता है. कोई काले धन के स्रोतों को, काले धन के कारणों को, काले धन की पहचान करना क्यों कठिन है, कैसे अमेरिका जैसे अन्य देश इसको करते हैं, लिखता है. समालोचनात्मक विश्लेषण का अर्थ यह नहीं होता कि आपको बहुत संक्षिप्त में बहुत अधिक गहरे कारणों को करना है.
विवरण	यह सबसे सरल निर्देश है. विवरण किसी घटना या तथ्य के सरल कथन का वर्णन है. विवरण में आप न तो आलोचना करेंगे और ना ही विश्लेषण. आप सीधे स्पष्ट विशेषताओं के बारे में लिखें. आप विशेषताओं को सीधे-सीधे लिखें.
सुस्पष्ट करना, विशदीकरण, विस्तृत विवरण और सविस्तार	ये लगभग सामान शब्द हैं. सामन्य तौर पर केन्द्रीय सेवा परीक्षाओं में वर्णन नहीं दिया गया है मगर अन्य प्रश्न वहाँ हैं. इन सभी मामलों में आप सीधे तरीके से तथ्य या तर्कों की अवस्था में हैं. आलोचना को नहीं आजमाना चाहिए. विस्तृत विवरण की आवश्यकता है.
भेद करना	यह निर्देश को दर्शाता है जब आप दो या अधिक घटनाओं के बीच अंतर को लिखते हैं. आपको सभी पहलुओं के भेद दिखाने हैं.

तुलना	यह निर्देश है जिसमें आप को सबसे पहले, घटना जिसकी आपको तुलना करनी है, के अर्थ का बहुत ही संक्षेप में प्रस्तुत करना है. तब आपको दोनों की विभिन्नताएं और वैसे ही समानताएं लिखनी हैं. निष्कर्ष में जब आप सार प्रस्तुत करते हैं समानताएं या भिन्नताएं क्या अधिक हैं, को लिखते हैं.
पुष्ट करना	इसका अर्थ है कि आप एक विशेष स्थिति को सिद्ध करते हैं. आप सिर्फ सकारात्मक पहलू बताते हैं. आप अपने तर्क को एक वकील की तरह प्रस्तुत करते हैं. आप परीक्षक को सहमत करते हैं.

IF YOU WANT TO DEPEND ON SINGLE SOURCE, YOU CAN TAKE LUKMAAN IAS PRINTED COURSE MATERIALS AS WELL AS HANDWRITTEN CLASS NOTES. FOR DETAILS ASK AT ENQUIRY DESK.